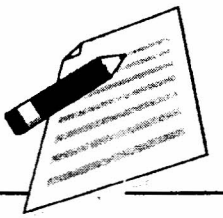

33

भारतीय सांस्कृतिक विरासत

पहले पाठ में हमने संस्कृति के अर्थ, इसकी अवधारणा और संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं की विवेचना की है। इस पाठ से हमें अपने देश की सांस्कृतिक विरासत के विषय में जानकारी प्राप्त होगी। हमारी पुरानी रीति-रिवाजों, प्रथाओं के विषय में जानकारी हासिल करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इनके ज्ञान और समझ से हम अपनी वर्तमान संस्कृति को समझ सकते हैं। हमारा भोजन, वस्त्र (पहनावा) भाषाएँ, संगीत और कला-कौशल के प्रकार आदि सभी हमारी संस्कृति के अंग हैं जो कलांत में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संक्रान्त होते चलते हैं। ये सभी, समय रूप में एक दूसरे में पिरोये हुए होकर एकबद्ध हैं और इनसे भारतीय संस्कृति को, सबसे अलग विशिष्टता प्राप्त है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- सांस्कृतिक विरासत का अर्थ बता सकेंगे;
- संस्कारीकरण क्या होता है? इसकी व्याख्या कर सकेंगे; और
- प्राचीन से अर्वाचीन तक की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का विवेचन कर सकेंगे।

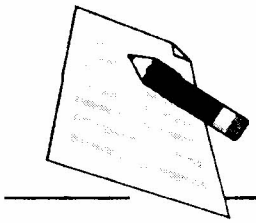

Notes

33.1 सांस्कृतिक विरासत का अर्थ

एक राष्ट्र उसकी प्राचीन और बर्तमान उपलब्धियों के द्वारा जाना जाता है। प्राचीन उपलब्धियाँ, जो समय के प्रहार से शेष रह जाती हैं, विरासत बन जाती हैं। इस भांति विरासत संस्कृति की वह तत्व है जो संतति भावी पीढी द्वारा सामूहिक रूप से अर्जित की जाती है। कोणार्क का 'सूर्य मंदिर' मिस्त्र के 'पिरामिड,' 'कुंभ मेला', अनेक ' धार्मिक रीति-रिवाज, आस्थाएँ और विश्वास, जोकि हमारे दैनिक जीवन से संबद्ध हैं, तथा वेद आदि हमारी विरासत के कुछ उदाहरण हैं।

हम, भारत के लोग, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित और छोड़ी गई एक सम्पन्न सांस्कृतिक विरासत के उत्तराधिकारी हैं।

> भारत की सांस्कृतिक विरासत केवल सबसे अधिक प्राचीन विरासतों में से ही एक नहीं है अपितु यह सर्वाधिक विस्तृत तथा विविधतापूर्ण विरासतों में भी एक है।

इसके संपूर्ण इतिहास में, विभिन्न संस्कृतियों के लोग या तो अस्थाई रूप से भारत के सम्पर्क में आते रहे हैं अथवा इसे एक विविधतापूर्ण विशिष्ट भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्रदान करते हुए यहाँ आकर स्थाई रूप से बस गए हैं। वास्तव में भारत की संस्कृति अनेक जीवन-पद्धतियों का समन्वय प्रस्तुत करती है। अनेक पीढ़ियों से भौतिक और बौद्धिक घटकों ने भारत को अपनी संस्कृति के बहुत से पहलुओं जैसे खानपान, वस्त्र, आभूषणों, वास्तुकला, शिल्प, भाषा, साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नृत्य, संगीत कला-कौशल और चित्रकला, नैतिक मूल्यों तथा प्रथाओं आदि द्वारा एक राष्ट्र के रूप में अनुपम पहचान दिलाई है। क्रियात्मक्ता के इन सभी क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियाँ जो समय के बीहड़ों को पार करते हुए हमें आज प्राप्त हुई है, हमारी विरासत कही जा सकती है। आगे के भाग में हम उनमें से कुछ का विवेचन करेंगे।

33.2 पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति–भारत का साहित्य

हम, भारतीय लोग, विश्व की सबसे प्राचीन साहित्यिक विरासत, तथा साहित्य के अनुपम भंडार जिन्हें 'वेद' कहते हैं, के उत्तराधिकारी एवं अर्जनकर्त्ता हैं ये ईसा से 1500 वर्ष पूर्व के माने जाते हैं जबकि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने खगोलशास्त्रीय साक्ष्यों के आधार पर वेदों के प्रारंभिक भाग की रचना का काल ईसा के जन्म से 200 वर्ष पूर्व माना है।

शब्द 'वेद' 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है 'ज्ञान'। वेदों में निहित संपूर्ण

ज्ञान मौखिक रूप से सुनकर पीढ़ियों तक सुरक्षित रखा जाता रहा। इस प्रणाली के कारण वेदों को 'श्रुति' भी कहते हैं जिसका अर्थ होता है वह वस्तु जो सुनी गई हो अथवा व्यक्त की गई हो। यह विश्वास किया जाता है कि वेदों को किसी ने रचा नहीं है। इनको ऋषियों द्वारा सुनाया गया अथवा ये उनके अनुभव के फलस्वरूप ऋषियों के मस्तिष्कों में आँखों की गहराई में दैवी रहस्य बनकर प्रगट हो गए। ऋषियों को जो अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई उसे वे भावी पीढ़ी में प्रेषित करने का माध्यम मात्र बने। वे उनके द्वारा मौखिक रूप से सुनाए गए और उन्हें सुनकर शिष्यों द्वारा ग्रहण किया गया। यही कारण है कि वेदों का दूसरा नाम 'श्रुति' भी है।

> वेदों की संख्या चार है। ये हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, 'साम' और 'अथर्व'। ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन धर्मग्रंथ है। यह एक विरासत है अकेले भारत की ही नहीं अपितु संपूर्ण मानवता की।

विशेष रूप से 'ऋग्वेद प्रार्थनाओं की रचना है, यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी संस्कारों की विवेचना है। सामवेद 'ऋग्वेद' के भाग की पुनरावृत्ति है विशेष रूप से उस संगीत से संबंधित है जिसका यज्ञ के संस्कारों में उपयुक्त अवसरों पर गान किया जाता है। अथर्व वेद की विषय-वस्तु में वह समस्त ज्ञान है जो कालांतर में विज्ञान जाना गया और वह भी है जो मानव-व्यवहार के संदर्भ के लिए चरित्रिक आदर्श और नैतिक नियमों के रूप में मान्य है।

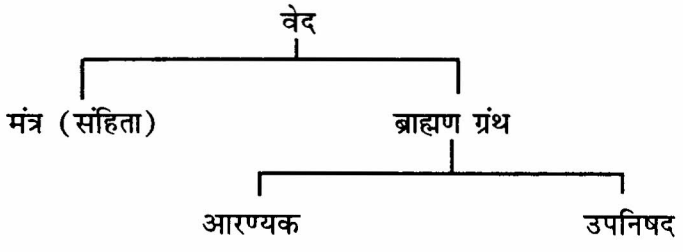

प्रत्येक वेद दो भागों में विभाजित है- 'मंत्र' और 'ब्राह्मण' (गद्यमय पूजा विधियाँ)। 'मंत्र' भाग को 'संहिता' भी पुकारा जाता है। 'ब्राह्मणों' में यज्ञ संबंधी पूजा-विधियों की जानकारी है। पूजा-विधियों से संबंधित संस्कारों को सांकेतिक व्याख्याओं पर आधारित ध्यान की सीख हमें आरण्यकों में प्राप्त होती है। मौटे तौर पर उपनिषदों को जीवन और जीवन के बाद की विकट समस्याओं के समाधान के लिए दार्शनिक दस्तावेजों के रूप में वर्णित किया जा सकता है। 'वेद' शब्द का मतलब हम केवल 'मंत्र' अथवा 'संहिता' भाग ही जानते हैं। प्रत्येक संहिता के अपने निजी ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् हैं जिनके अलग-अलग और स्वतंत्र नाम है।

Notes

प्रत्येक संहिता कई भागों में विभाजित है। ऐसा एक भाग 'मंडल' कहलाता है। 'मंडल' 'सूक्तों' (परस्पर संबंधित मंत्र-समूह) में विभक्त हैं और एक सूक्त में अनेक मंत्र-ऋचाएँ हैं।

महत्व की दृष्टि से दूसरी कृति ''भगवद्गीता'' है। यह महाभारत का एक अभिन्न अंग है, जो श्रीकृष्ण (भगवान विष्णु के अवतार जाने जाते हैं) और राजकुमार योद्धा अर्जुन के बीच परस्पर ज्ञान-चर्चा रूप में निबद्ध है। दोनों की यह वार्ता युद्ध भूमि के मध्य हुई। इसमें जीवन तथा मृत्यु, कर्त्तव्य, भक्ति, ज्ञान, ध्यान, वैराग्य आदि की समस्याएँ और उनके समाधानों की विवेचनाएँ निहित हैं। इस महान ग्रंथ की मूलधारणा मनुष्यता और कर्त्तव्य के पूर्ति आत्म-रहित त्याग और भक्ति है। 'श्रुति' से अलग साहित्य का एक दूसरा अंश 'स्मृति' है जिसका सामान्य अर्थ 'जो स्मरण या याद किया गया'' होता है।

'श्रुति' से संदर्भ दर्शाते हुए 'स्मृति' में ''श्रुति' की मूल शिक्षाओं की व्याख्याएँ विवेचनाएं और प्रमाण या उदाहरण दिए गए हैं। समाज को नियमबद्ध रखने के लिए इनमें नियम दिए गए हैं। स्मृतियों में सबसे प्रमुख 'मनु-स्मृति' है। दूसरी स्मृतियाँ-पाराशर, याज्ञवल्कय, वशिष्ठ आदि की हैं। ये लगभग एक सौ की संख्या में हैं।

इसके बाद 'रामायण' और 'महाभारत'' आते हैं जिन्हें तकनीकी रूप से इतिहास ग्रंथ कहा जाता है। उनमें दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण राज-परिवारों 'इक्ष्वाकु'' और ''कुरू'', जिन्होंने भारत के भाग्य का निर्माण किया है, का इतिहास है। यद्यपि मूलत: इनमें 'राम' जो इक्ष्वाक' वंश के थे तथा 'कौरव-पांडव' जो 'कुरू' वंश के थे, की कथाएँ हैं, ये ग्रंथ भारतीय संस्कृति के मूलाधार के रूप में श्रद्धा पूर्वक मान्य हैं।

इससे आगे 'पुराण' आते हैं, इनकी संख्या 36 है अठारह महापुराण तथा आठरह उपपुराण। इनमें ठोस उदाहरणों द्वारा प्रमुख मानव मूल्यों की व्याख्या करने वाली ऐतिहासिक घटनाओं और महापुरुषों की कहानियाँ संग्रहित हैं। बुद्धधर्म की जातक कथाएँ तथा जैन साहित्य बुद्ध भगवान तथा महावीर स्वामी के अनेक अवतारों की संदर्भ में चर्चा से परीपूर्ण हैं और इनमें परम मानवीय संबंधों को दर्शाने वाले जीवन मूल्यों की विवेचनाएँ की गई हैं।

साहित्य का एक दूसरा अंश 'आगम'' नाम से जाना जाता है। ये पंथ-विशेष के धर्मग्रंथ जैसे हैं, जिनमें विशेष देवी-देवताओं की उपासना पद्धतियाँ तथा उपासकों के लिए अनुशासन-सिद्धान्तों के वर्णन हैं।

Notes

प्राचीन भारत के विभिन्न कालों में छह दर्शनों (षट्दर्शन) की धूम रही। वे 'दर्शन' अर्थात, 'सत्य के दर्शन' के रूप में जाने जाते हैं। ये गौतम ऋषि का 'न्याय', 'कणाद' का वैशषिक' 'कपिल' का 'सांख्य' 'पतंजलि' का 'योग', 'जैमिनी' का 'मीमांसा', और 'बादरायण या व्यास' का बेदान्त' है। 'न्याय और 'वैशषिक' निर्माण के अणु सिद्धान्त पर आधारित धर्मग्रंथ है। 'साख्य' चेतन 'आत्मा' और अचेतन 'पदार्थ' को रचना का मूल तत्व स्वीकार करता है। 'योग' मन और शरीर पर नियंत्रण की व्याख्या करता है। ''मीमांसा'' वैदिक धर्म-पद्धतियों का समर्थक है। वेदान्त में वेदों का सारतत्व निहित है जो उपनिषदों पर आधारित है।

गीता, ब्रह्मसूत्र (व्यास) और-वेदान्त- ये तीनों 'प्रस्थान-त्रया' कहलाते हैं जिसका अर्थ है- सर्वोच्च लक्ष्य की ओर ले जाने वाले तीन मूल धर्मग्रंथ। वेदान्त दर्शन द्वारा उठाई गई मूल समस्याओं के तर्कपूर्ण समाधान सुझाता है।

सहस्रों सदियों से हिंदू जीवन-पद्धति के नियामक माने जाने वाले इन आधारभूत धर्मग्रंथों के अलावा प्राचीन भारत की काल और स्थाननिरपेक्ष कुछ अन्य साहित्यिक कृतियाँ भी हैं। वे 'विष्णु शर्मा' कृत 'पंचतंत्र', कल्हण कृत 'रजतरिंगणी', 'बाणभट्ट' कृत 'कादम्बरी' 'कालिदास' कृत 'मेघदूत,' 'चाणक्य' कृत 'अर्थशास्त्र', 'पाणिनी' कृत 'अष्टाध्यायी' (व्याकरण का विवेचन) तथा 'भरत' का 'नाट्य शास्त्र' आदि हैं। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के विवेचन भी हुए हैं जैसे : औषधि' तथा 'शल्य' चिकित्सा पर 'चरक' और सुश्रुत संहिताएँ तथा खगोलशास्त्र की बराहमिहिर कृत 'बृहत संहिता' आदि।

कुछ समय पूर्व भारतीय इतिहास में मुगल शासक भी साहित्य के महान पोषक रहे हैं और उन्होंने इसके विभिन्न अंगों के विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रेरणाएँ प्रदान की हैं। सम्राट ही नहीं आपितु शाही हरमों की बेगमें, हुमायूँ की माता से लेकर औरंगजेब की प्रसिद्ध पुत्री जेबुन्निसा तक, कला और साहित्य की संरक्षक रही हैं। बाबर और जहाँगीर ने अपने स्वयं के संस्मरण लिखे हैं। अकबर के संरक्षण में अनेक विचारक और विद्वान पैदा हुए तथा उन्होंने अनेक सुरुचिपूर्ण एवं महत्वपूर्ण कृतियों की रचनाएँ की। अकबर के दरबार में कवियों तथा साहित्यकारों की विद्वत्सभा एकत्रित होती थी। अबुल-फजल अकबर के मित्र दार्शनिक और सलाहकार थे जिन्होंने 'दीन-ए-अकबरी' की रचना की है। विद्वान शाहजादे 'दारा' ने प्रमुख उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया। भारत के पश्चिम से संपर्क स्थापित होने से लेकर उन्नीसवीं सदी के अर्धशती के मध्य तक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।

भारत के महापुरुषों, जैसे राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी तथा अन्य अनेक महा पुरुषों ने भारत की सामाजिक प्रथाओं जैसे ब्राह्मणों के धार्मिक पूजा पाठ, जाति-बंधन विधवा तथा नारियों की दुर्दशा, की आलोचनात्मक जांच-परख करने की ओर विशेष ध्यान दिया और भारतीय समाज को सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों से छुटकारा दिलाने का भारतीय संस्कृत के अनेक ग्रंथों के अंगरेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए। अंग्रेजी भाषा के व्यापक प्रचार से नवीन विचारधारा तथा पाश्चात्य विचार को क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य में प्रस्तुत किया गया। साहित्य की विभिन्न विद्याओं, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध तथा पद्य को समृद्धि प्राप्त हुई। बीसवीं सदी के आगमन के साथ राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता संघर्ष ने भारतीय साहित्य को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कर दिया।

आज हम अपने साहित्यों को यथार्थ और एक व्यापक ग्लोबल दृष्टिकोण के भावों से ओतप्रोत पाते हैं। राष्ट्रीय भावना और देशनुराग ने वर्तमान साहित्य के उत्थान का गंभीरता से प्रभावित किया और परिणाम यह रहा कि इस युग में सर्वोत्कृष्ट रचनाएं रची गई। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुब्रमण्यम भारती, दिनकर, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू (कुछ थोडे नाम दिए जा रहे हैं,) अदि सामर्थ्यवान लेखकों की मंडली इस परिदृश्य की अग्रणी बनी जिनकी रचनाएं आज हमारी विरासत का एक अंग बन चुकी है।

गांधी, नेहरू, टैगोर, विवेकानंद तथा दिनकर आदि के फोटो दिए गएं।

33.3 नृत्य एवं संगीत

राजाओं और विद्वानों द्वारा संरक्षित नृत्य एवं संगीत सदा से ही भारतीय संस्कृति में प्रसिद्ध रहा है। फिर भी, अठारहवीं सदी के पहले चतुर्थंश में मोहम्मद शाह ने उदारतापूर्वक संगीत को संरक्षण दिया। सिद्धहस्त संगीतकार अदारंग और सदारंग प्रसिद्ध वीणावादक हुए। तंजोर (दक्षिण) के राजा तुला जी स्वयं एक मंजे हुए संगीतकार थे। उन्होंने उदारतापूर्वक संगीतज्ञों को संरक्षण दिया। उन्होंने संगीत पर एक प्रसिद्ध पुस्तक 'संगीत सारामृत'' की रचना की। तंजोर के त्यागराज के भजन(भक्ति संगीत) दक्षिण भारत में बहुत मशहूर हैं।

Notes

वर्तमान भारत में संगीत के साथ नृत्य को भी प्रोत्साहित किया गया। 'कथकली,' 'मणिपुरी', भारतनाट्यम, तथा 'ओडिसी' की परंपराओं को महान, कलाकार रूक्मणी देवी, मेनका, गोपीनाथ (भारतनाट्यम) मैडम सिमकी (कथकली) राजकुमार तथा प्रिया गोपाल (मणिपुरी), रघुनाथ पाणिग्रही, संयुक्ता पाणिग्रही युगले (ओडिसी) तथा उनके गुरू केलु चरण महापात्र ने नृत्य और संगीत दोनों को अखिल भारतीय स्तर एवं विदेशों तक में बहुत प्रसिद्धि प्रदान की है। भारत लोकनृत्य और लोकगीत के क्षेत्रों में बहुत संपन्न है। शास्त्रीय नृत्यों के साथ लोकनृत्य भी फल-फूल रहे हैं। प्रसिद्ध और जाने-माने लोकनृत्यों में 'भील नृत्य' 'संथाल नृत्य' गाजर (बंगाली), कजरी (यू. पी. तथा बिहार) तथा अहीर-नृत्य (यू.पी), उड़ीसा का हाऊ नये-नये कितने जमाने से भारत के लोगों का मनोरंजन करते चले आ रहे हैं। छड़ी, तलवारों द्वारा किया जाने वाला वीर-नृत्य भी भारत भर में खूब लोकप्रिय हैं। कुछ आदिवासी लोगों के नृत्य बेहद आकर्षक हैं।

भारत के लोकनृत्यों और दूसरे नृत्यों पर अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। पश्चिमी बंगाल के ''शांतिनिकेतन'' की तरह अन्य अनेक संस्था नृत्य, संगीत तथा अन्य कला-कौशलों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रही हैं। संगीत भी नृत्य की पद्धतियों के अनुरूप ढला और बुना गया है। भारत सरकार भी इस दिशा में बहुत सारा कार्य कर रही है। साहित्य अकादमी (जानी-मानी राष्ट्रीय अकादमी) संगीत नाटक अकादमी (संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी) तथा ललित कला अकादमी (ललित कलाओं के लिए अकादमी) भारत सरकार द्वारा कला और संस्कृति के विकास के लिए स्थापित कुछ विशिष्ट एवं प्रमुख अकादमिक संस्थाएं हैं।

पाठगत प्रश्न 33.1

कालम 'अ' का 'ब' कालम से मिलान कीजिए।

'अ'	'ब'
1. अदारंग और सदारंग	1. ओडिसी
2. रघुनाथ पाणिग्रही और संजुक्ता पाणिग्रही	2. कथकली
3. रुकमिनी देवी	3. वीणा
4. मैडम सिमकी	4. भरत नाट्यम

33.4 कला और चित्रकला

प्राचीन भारत की चित्रकारी सभी कालों में अभिनव रही है। अजन्ता और ऐलोरा की गुफाओं तथा उसी तर्ज पर ग्वालियर के 'बाघ' की गुफाओं की दीवारों एवं छतों पर बनी फ्रस्को चिव्रात्मक कलाएं आज भी प्रशंसनीय एवं आकर्षक हैं। इनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण निर्मितियों में हाथियों और नर्तकों की महिला संगीत कारों के साथ शोभा-यात्रा है। मधुबनी (बिहार) की मधुबनी चित्रकारियों तथा उड़ीसा की पाट्टा कला कृतियाँ प्राचीन कला-कौशल तथा चित्रकारी के सुंदर उदाहरण हैं। राजपूत चित्रकारियाँ, मार्मिक, सुकुमार और शांत तथा निर्मल हैं। उनमें धर्म से अभिन्न लगाव झलकता है।

मुगल काल में ललित कला महत्वपूर्ण उत्कर्ष के स्तर पर जा पहुँची थी। ललित कलाओं के प्रेमी होने के कारण मुगल सम्राटों ने नई-नई तकनीक और तरीकों का संरक्षण दिया जिनमें फारसी और भारतीय तत्वों का सम्मिश्रण, भलीभांति दिखाई देता है, कला-कौशल के इस संश्लेषण ने तदयुगीन चित्रकला, वास्तुकला, कशीदाकारी, आभूषणों और धातु की कारीगरी पर गहरी छाप छोड़ी है। अकबर के काल में चित्रकला ने विलक्षण प्रगति की। उसकी व्यक्तिगत अभिरुचि, उदार कलात्मक प्रकृति, विदेशी कलाकारों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण उसकी धार्मिक सहिष्णुता, तथा हिंदुओं के साथ सक्रिय समागम उसके युग की चित्रकारियों में ध्यान देने योग्य हैं। जब अकबर फतेहपुर सीकरी की अपनी नई राजधानी में था, उस समय चित्रकला के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य हुए। इस युग की सभी कलात्मक रचनाओं में विलास की गंध है।

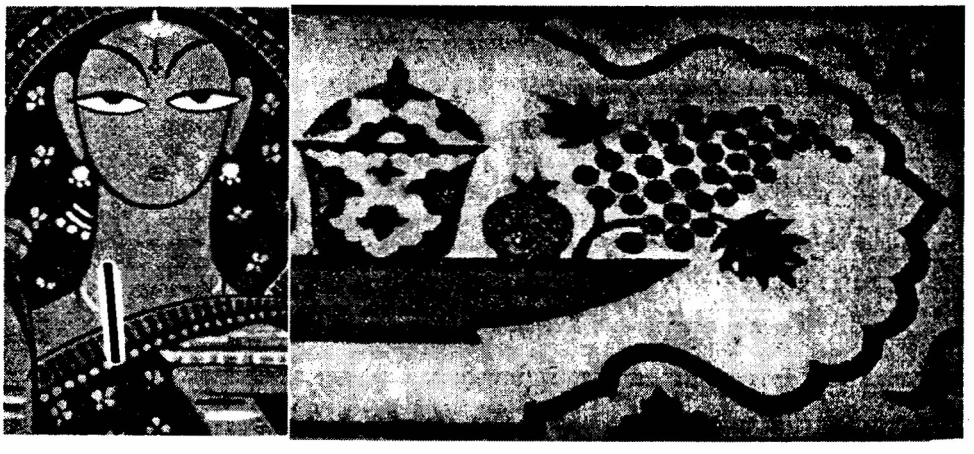

मुगलों परामव के बाद परंपरागत निरंतरता गायब हो गई। रचनात्मक शक्ति और वास्तविक काल की सराहना का संक... मानो, पराजित और विलीन हो गया। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में कला ... न के क्षेत्र में जो नई शुरूआत

सक्रियता से हुई वह मुख्यत: बंगाल पुनर्जागरण के द्वारा हुई। फिर धीरे-धीरे यह देश के अन्य भागों में फैली। रवि वर्मा और एम0 एफ0 हुसैन कलाकारो ने (फोटो दिया. ..) जिन्होंने चित्रकला के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है, का उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

33.5 वास्तु कला

प्राचीन भारत साहित्य की तरह मूर्ति-शिल्प और वास्तुकला के क्षेत्र में भी उतना ही समृद्ध रहा है। देवगढ़ का 'विष्णु मंदिर', कोणार्क का 'सूर्य मंदिर', पुरी का सुप्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर प्राचीन भारतीय वास्तु-कला के रत्नों- की भांति प्रशंसनीय हैं। हल्के पीले रंग के रंगीन बलुई पत्थरों के बने हुए बुंदेलखंड में खजुराहो के मंदिर आज भी, प्राचीन भारत की वास्तुकला की उत्कृष्टता के घनघोर साक्ष्य के रूप में खड़े हुए हैं। माउन्ट आबू के दिलवारा जैन मंदिर मूर्तिकला के सौन्दर्य के सर्वाधिक अनुपम, समृद्ध और लालित्यपूर्ण नमूने एवं चित्रण हैं। उड़ीसा के मंदिर भारतीय वास्तुकला के क्षेत्र में विशेष महत्व रखते हैं। बिना खंभों के **वितान** (हॉल) एक सजावट युक्त भीतरी भाग और अत्यंत शिल्पयुक्त सजा हुआ **बाहय** भाग उड़ीसा के मंदिरों की अभिनव विशेषताएँ हैं। कोणार्क के सूर्य मंदिर तथा पुरी के जगन्नाथ मंदिर के अलावा भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर, मुक्तेश्वर मंदिर और राजारानी मंदिर इनमें सबसे अधिक सुन्दर हैं। चित्तौड़गढ, ग्वालियर के शानदार और मजबूत किले, जोधपुर का विशाल किला, जयपुर के हवामहल, आमेर का महल तथा ,उदयपुर, जयपुर ग्वालियर के महल, जैसलमेर, कोटा, उदयपुर कस्बे भारत के वास्तुकला के कौशल के कुछ अन्य उदाहरण है।

कोणर्क के मंदिर का चित्र

Notes

मुगलों के आगमन के साथ भारतीय वास्तुकला का एक नए सोपान में प्रवेश हुआ जिसमें दिल्ली के सुल्तानों के खुरदरे और साधारण कार्य को फारसी प्रभाव देकर उसे मुलायम और आकर्षक बनाया गया। मुगल काल में वास्तुकला ने बहुत ऊँची चोटी का स्थान प्राप्त किया। मुगल स्थापत्य कला में फारसी और भारतीय शैली का खूबसूरत मिश्रण स्पष्ट प्रकट होता है। फतेहपुर सीकरी का गोल गुंबज, आगरा का ताजमहल, लाल किला, दीवान ए- आम, दिवान- ए- खास और जामा मस्जिद इस शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुगल लोग बाग बगीचों के लिए प्रसिद्ध थे। फारसी शैली के अनुसार, बागों की डिजायन ज्यामिति के अनुकूल होकर उनमें कृत्रिम झीलें, नालियाँ, तालाब, तथा पानी के झरने होते थे जो मुक्त रूप से बनाए जाते थे। इनमें दूसरा महत्वपूर्ण नव-निर्माण विभिन्न स्तरों पर चबूतरों का बनाना होता था।

ब्रिटिश शासन काल में, पाश्चात्य वास्तुकला की शैलियाँ लोकप्रिय हुईं और संपूर्ण देश में उनका प्रसार हुआ। बीसवीं सदी के आरंभ में, भारतीय वास्तु शास्त्र में दो भिन्न कलाकारों के समूह प्रकट हुए। पहला पुनर्जीवित करने वाला समूह जो स्वदेशी वास्तुकला के पुनर्जीवन का लक्ष्य लेकर उदित हुआ था ; और दूसरा प्रगतिशील और आधुनिक समूह जिसका पाश्चात्य नमूनों की ओर झुकाव था। दूसरा अधिक लोकप्रिय हुआ।

कलकत्ते का विक्टोरिया मैमोरियल तथा 'नई दिल्ली' इंजीनियरों द्वारा डिजायन किये गए थे। पाश्चात्य वास्तुकला के विस्तार के बावजूद अनेक भारतीय राजकुमारों और नबाबों ने परंपरागत भारतीय शैली के कुछ भवन तैयार कराए। आधुनिक शानदार भवनों में उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, मैसूर तथा अन्य दूसरे स्थानों के शानदार भवन भारतीय कुशल वास्तुकारों की कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने हैं। हरिद्वार, उज्जैन, वाराणसी और महेश्वर के स्नान करने के लिए बने हुए घाट, मथुरा के मंदिर, इंदौर का जैन कांच महल (मंदिर), दिल्ली का बिरला मंदिर, मध्य प्रदेश के नागदा में बना 'विष्णु मंदिर' आदि ऐसे हैं जिन पर पाश्चात्य विचारों का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। ये वर्तमान युग में भारतीय स्थापत्यकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

33.6 मूर्तिकला / मूर्ति शिल्प

मथुरा और सारनाथ के शिल्पकार समूहों ने मूर्तियों के भौतिक सौन्दर्य, तथा उनकी मुख-मुद्रओं की प्रभाविता पर विशेष ध्यान दिया। विष्णु, शिव, बुद्ध और अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां बारिकी से हर बातों को ध्यान में रखकर तराशी गयी थीं। उड़ीसा (पुरी, कोणार्क, भुवनेश्वर आदि) के मंदिरों के भीतर पाए जाने वाली मूर्तियाँ

Notes

एक लयात्मकता तथा सौन्दर्य की चेतना से विकसित की गई है।

वर्तमान भारत ने प्राचीन और मध्ययुगीन मूर्ति कला को संभाल कर रखा है किंतु समकालीन भारत में मूर्तिकला के क्षेत्र में प्रगतिशीलता का कोई उल्लेखनीय चिह्न नहीं दिखाई देता।

पाठगत प्रश्न 33.2

उन स्थानों के नाम लिखिए जहाँ निम्नांकित स्थित है,

(अ) सूर्य मंदिर (ब) बिक्टोरिया मैमोरियल

(स) हवामहल (द) ताजमहल।

33.7 आदर्श प्रतिमान और जीवन–मूल्य

प्रत्येक संस्कृति में कई तरह के पथ-दर्शक नियम होते हैं जो व्यक्ति और समूहों को विशेष स्थितियों में उनके अनुरूप मार्गदर्शन करती हैं। एक आदर्श प्रतिमान एक विशेष दर्शक का काम करती है यह हमे कौन सा कार्य करने योग्य है और उपयुक्त है को, बताकर खास परिस्थितियों तथा समुचित व्यवहारों की सीख देती है।

दूसरी ओर जीवन-मूल्य अधिक समान्य 'गाइडलाइन्स' या पथप्रदर्शक होते हैं। जीवन-मूल्य एक ऐसा विश्वास है जो यह बताता है कि अमुक वस्तु अच्छी और करणीय है तथा अमुक नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्या महत्वपूर्ण और क्या उपयुक्त है और क्या करने या क्या न करने योग्य है।

अनेक '**नॉर्म्स**' अथवा आदर्श प्रतिमान मूल्यों की प्रतिबिम्ब होती हैं। अनेक कई तरह की प्रतिमाने को एक ही जीवन मूल्य को व्यक्त करते हुए देखा जा सकता है। कुछ प्रतिमान और मूल्य मानव-समाज के संचालन के लिए अनिवार्य और महत्वपूर्ण होते हैं।

प्राचीन भारत के विचारकों द्वारा विशेष परिस्थितियों में लोगों को अपने आपसी संबंधों के चलाने या बनाए रखने के लिए खास 'गाइडलाइन्स' या मार्गदर्शन देने के लिए बहुत अधिक ध्यान दिया गया था।

प्राचीन भारत के जीवन-मूल्य और चलन बहुत महत्वपूर्ण थे। ये रीतियाँ या चलन हमें

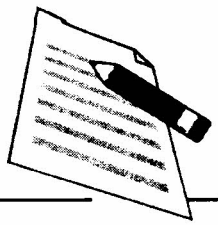

Notes

शादियों, धार्मिक कृत्यों तथा भाषाओं के प्रयोग में आसानी से दिखाई दे जाते हैं। उदाहरणत: गृह-सूत्र के अनुसार निर्धारित है कि आगे वर्णित धार्मिक या पूजा-कार्य विवाहोत्सव के लिए अनिवार्य हैं, जैसे कन्यादान, अग्नि स्थापना, होम, पाणिग्रहण, लज्जाहोम, अग्नि परिणयन तथा सप्तापदी ये धार्मिक संस्कार या कृत्य परंपरागत विवाहोत्सव के एक अभिन्न अंग होते हैं। इनके अतिरिक्त 'लोकाचार' अर्थात समुदाय या समाज में चलन में आई हुई रीति-रिवाजों का भी पालन किया जाता है। यदि इनके विषय में कोई संदेह होता है तो बड़ी-बूढ़ी माताओं से प्राय:, परामर्श लिया जाता है। यही चलन आदिकाल से चला आ रहा है।

समस्त मानव समाजों में अपने-अपने धार्मिक रीति-रिवाजों की मान्यताएँ हैं जिन्हें उनके सदस्यगण महत्वपूर्ण मानते हैं, भारतीय समाज में धार्मिक कृत्यों या रीति-रिवाजों पर कुछ अधिक और ऊँचे दरजे का बल दिया जाता है। देवी-देवताओं की दैनिक पूजा के अतिरिक्त चलते रास्ते, उत्सवों, तीर्थ-यात्राओं आदि से संबंधित असंख्य रीति-रिवाजें हैं। उदाहरण के लिए बिना किसी घोषणा या निमंत्रण के, हरिद्वार तथा प्रयाग जैसे विशिष्ट स्थानों में कुंभ मेले जैसे विशिष्ट अवसरों पर लाखों लोग भारत के कोने-कोने से इकट्ठे होकर समागम करते हैं। इस रीति के प्रति लोगों के सोच-विचार, जीवन मूल्य और आस्थाएँ आज भी वही है जो वर्षों पहले थीं। भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई धार्मिक रीति-रिवाजे तथा जीवन मूल्य लगातार 'समन्वय'' की ओर सक्रिय हैं जिसका भाव है आपस में तालमेल तथा मेलभाव बढ़ाना। धार्मिक रीति-रिवाज समय-समय पर सुधरते रहे हैं, परंतु विभिन्न नए वातावरणों विविधतापूर्ण जातिगत सुधारें के बावजूद भारतीय संस्कृति में जीवन-मूल्यों और रीति-रिवाजों की निरंतरता पर मूल रूप से कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

33.8 विज्ञान और प्रौद्योगिकी

प्राचीन भारत में वेदों के अध्ययन के अतिरिक्त अनेक अन्य विषय जैसे खगोल शास्त्र, ज्योमेट्री, अर्थमेटिक, **भैषज** विज्ञान, चिकित्सा, (आयुर्वेद) कृषि, सैन्य विज्ञान (धनुर्विद्या) आदि भी प्रचुर अभिरुचि के साथ पढ़े जाते थे। वैदिक जीवन-पद्धतियों के अनुसार निर्धारित आकार और प्रकार ज्यामतीय रीति से बनी वेदी पर यज्ञ किए जाते थे। इस आवश्यकता के कारण ज्योमेट्री विज्ञान को बढ़ावा मिला। पूर्व पुजारियों ने बड़े-बड़े वर्गाकार आयतों से आयताकर तथा आयतों से वर्गाकार बनाने के नियम बनाए तथा वर्गों एवं आयतों से त्रिभुज और वर्गों के समाज वृत्त आदि खींचने के तरीके खोज निकाले। बौद्धयन एक गणितज्ञ थे। वृद्धगर्ग लग्धा, आर्यभट्ट, खगोलशास्त्रीयों आदि

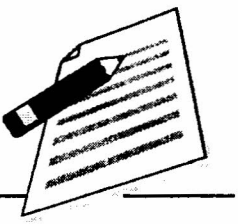

Notes

का भारत में विज्ञान के अध्ययन में अमिट योगदान है। आर्यभट्ट के दो महान वैज्ञानिक कृतियाँ हैं- ''आर्यभट्टीय'' और ''सूर्य-सिद्धान्त।'' वे ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने सिद्ध किया कि पृथ्वी गोल है और सूर्य की परिक्रमा करती है। उन्होंने सितारों (ग्रहों) की गतियों की विवेचना की और सूर्य एवं चंद्र ग्रहणों के कारणों का विश्लेषण किया। इससे भी अधिक, आर्यभट्टीय' में, बीजगणित, ज्योमेट्री, अंकगणित तथा त्रिकोणमिति का ज्ञान भी निहित है। इसमें अंकों पर भी प्रकाश डाला गया है। विज्ञान और गणित के लिए 'शून्य' की धारणा उनका अप्रतिम एवं अमिट योगदान है।

'वाराह मिहिर' उस युग के दूसरे वैज्ञानिक थे। उन्होंने सुप्रसिद्ध कृति बृहत् संहिता' की रचना की जिसमें वनस्पति शास्त्र, भूगोल तथा अन्य अनेक विषयों का अध्ययन सम्मिलित है। किंतु उनका प्रमुख एवं आज भी विषय 'खगोल शास्त्र' है।

खगोलशास्त्र और गणित के अलावा गुप्त काल में भैषज विज्ञान ने भी अदभुत उन्नति की। वृद्ध-वाग्भट्ट उस युग के महान चिकित्सक थे। उनके द्वारा अपनायी और प्रचारित की गई औषध विज्ञान की प्रणाली वही थी जो 'चरक' की है। वह प्राचीन भारत की औषध प्रणालियों में से एक प्राधिकृति प्रणाली मानी जाती है। औषध विज्ञान के आयुर्वेद विज्ञान में ''धनवन्तिरी'' एक दूसरे महान विद्वान थे।

'ब्रह्मगुप्त' उस युग के एक अन्य सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे। उन्होंने 'शून्य' के प्रयोग' की खोज की तथा दशमलव' प्रणाली का पांडित्यपूर्ण विवेचन किया। इन दो खोजों से गणित के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न हुई।

यद्यपि भारत ने प्राचीन युग में विज्ञान के क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की थी परंतु मध्ययुग में इसे बहुत क्षति उठानी पड़ी। परंतु पश्चिम से संपर्क और भारतीय पुनर्जागरण के कारण भारतीयों को यह महसूस करना पड़ा कि पश्चिम की अनुपम भौतिक प्रगति और वैभव का श्रेय उनके वैज्ञानिक विकास तथा उनके द्वारा की गई वैज्ञानिक खोजों और अविष्कारों को है। सर जगदीश चंद्र बोस ने 1897 ई. पादप-जीवन ''पर खोज की और अपनी 'सूक्ष्म-तरंग (शर्टबेव वायरलेस)के प्रयोग से संपूर्ण विश्व को चकित कर दिया। सन् 1902में प्रफुल्ल चंद्र राय ने भारतीय रसायन का इतिहास लिखा जिससे पाश्चात्य देश रसायन-शास्त्र के क्षेत्र में हमारी प्रगति से परिचित हुए। भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र आदि क्षेत्रों में शोधों के लिए टाटा ने भारतीय विज्ञान संस्थान (इंडियन इनस्टीट्यूट ऑफ सांइस)की स्थापना बैंगलोर में की। 1914 ई. में विज्ञान के अध्ययन और शोध की प्रगति, विज्ञान की प्रगति से लोगों को परिचित कराने, विज्ञान के प्रति अभिरुचि जाग्रत करने, और वैज्ञानिकों में परस्पर निकट संपर्क बढाने के लक्ष्य से,

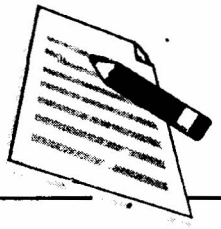

Notes

'भारतीय विज्ञान कांग्रेस' प्रारंभ की गई। यह विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है और अंतरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। 1918 में श्री निदास रामनुजम ने गणित में अपने नैपुण्य से विश्व को चकित कर दिया था। वनस्पति शास्त्र के क्षेत्र में सर जगदीश चंद्र बोस, 1930 में भौतिक शास्त्र के क्षेत्र में श्री सी वी रमन आदि ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति और नाम प्राप्त किए हैं। 1930 का नोबेल पुरस्कार भी सी वी रमन को उनकी खोजों की अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता के कारण ही प्राप्त हुआ। भौतिक शास्त्र के अध्ययन को बढ़ावा देने के लक्ष्य से उन्होंने बेंगलूर में 'रमन विज्ञान संस्थान' स्थापित किया। विज्ञान की प्रगति के लिए इलाहाबाद में, जून 1930 में 'राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी'' की स्थापना की गई। इन संस्थाओं तथा इनके शोधकर्ताओं के परिणामस्वरूप विज्ञान ने प्रसिद्धि प्राप्त की। कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में इसे अध्ययन का एक विषय बनाया गया।

राजनीतिक स्वतंत्रता के वाद भारत सरकार ने बैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए एक अलग विभाग खोला है तथा इसके लिए एक सलाहकार समिति बनाई है। धीरे-धीरे वैज्ञानिक खोजों और अविष्कारों में अभिरुचि बढ़ी है तथा जन-समुदाय और सरकार दोनों इन दिशा में तेजी से आगे बढ़े हैं। फलतः बड़ी संख्या में तकनीकी एवं वैज्ञानिक संस्थाएँ स्थापित की गई। इनमें से ''नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी'', दिल्ली, ''नेशनल कैमीकल लेबोरेटरी'' पूना, ''नेशनल मैटोलर्जिकल लेबोरेटरी'' जमशेदपुर, झरिया में ईंधन शोध संस्थान (फ्यूअल रिसर्च इंस्टीट्यूट) एवं झरिया कोलफील्डस, कलकत्ता में ''सेंट्रल ग्लास एंड सैरोमिक रिसर्च इंस्टीट्यूट,'' 'इंस्टीट्यूट ऑफ रेडिया फिजिक्स एडं इलैक्ट्रोनिक्स' आदि सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थाएँ हैं। इनके अतिरिक्त 1916 में स्थापित ''जियोलोजीकल सर्वे ऑफ इंडिया'' तथा ''बॉटेनी कल सर्वे ऑफ इंडिया'' भी अपने-अपने क्षेत्रों में प्रशसनीय कार्य कर रही हैं। इन सभी संस्थाओं ने वैज्ञानिक तैयार किए हैं और विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में बहुमूल्य योगदान आज भी दे रही हैं।

हमारे देश में ख्यातिप्राप्त डॉ. राजा रमन्ना जैसे महान नाभिकीय वैज्ञानिक भी हैं जो नाभिक विज्ञान के जनक माने जाते हैं। अंतरिक्ष विज्ञानी डॉ. ए0 पी0 जो0 अब्दुल कलाम और कल्पना चावला ने भी अपने क्षेत्रों में अद्‌भुत प्रशंसनीय योगदान दिए हैं। महामहिम डॉ. ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम को अपने देश के राष्ट्रपति के रूप में पाकर हमें गर्व है जबकि अंतरिक्ष की प्रथम भारतीय महिला वैज्ञानिक स्वर्गीय कल्पना चावला के न रहने से शोकग्रस्त हैं।

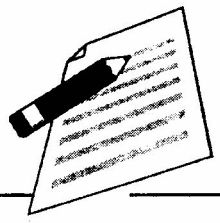

Notes

पाठगत प्रश्न 33.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो

(अ) ..... प्राचीन भारत सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे।

(ब) ..... 'आर्यभट्टीय' और 'सूर्य-सिद्धांत' जैसे दो वैज्ञानिक कृतियों के लेखक थे।

(स) .....ने भौतिक शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।

(द) इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बेंगलूर की स्थापना .....के द्वारा की गई।

आपने क्या सीखा

- भारत की सांस्कृतिक विरासत बड़ी समृद्ध है।
- इस पाठ के दूसरे भाग में संस्कृति के विभिन्न पहलुओं-साहित्य, वास्तु कला मूर्ति या शिल्पकला एवं चित्रकला और संगीत एवं नृत्य के साथ ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी का वर्णन है ताकि भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अधिक अच्छे तरीके से समझा जा सके।
- भारतीय संस्कृति में विविध घटक, जैसे आर्यों, द्रविड़ों, पारसियाँ, यूनानियाँ, चीनियों, मुसलमानों तथा विभिन्न दूसरी संस्कृतियों के स्वरूप घुलमिल गए हैं जिससे यह संस्कृति अधिक विस्तृत और समान्वित हो गई है।
- आज हमें ऐसी मानवतावादी संस्कृति की आवश्यकता है जो भारत की प्राचीन और अर्वाचीन संस्कृतियों को न केवल मिलाकर रखे अपितु उसमें पूरब और पश्चिम दोनों का संश्लेषण हो। भारत एक मात्र देश है जहाँ पूर्व और पश्चिम प्रसन्नता पूर्वक संबंध बनाए रख सकते हैं और आसानी से घुलमिल सकते हैं।
- हमें एक ऐसे नवीन मेल-मिलाप (संश्लेषण) की आवश्यकता है जिसमें हमारी भूमि की प्राचीन संस्कृति पुनर्गठित और समृद्ध हो सके।
- एक सम्पन्न विरासत से बढ़कर अन्य कुछ भी अधिक लाभदायक और अधिक प्रशंसनीय नहीं है। पर मात्र उसी विरासत पर आश्रित रहने से बढ़कर खतरनाक वस्तु भी एक राष्ट्र के लिए और कुछ नहीं है।
- एक राष्ट्र अपने पूर्वजों का अनुकरण मात्र करके कभी भी तरक्की नहीं कर सकता है। जिससे एक राष्ट्र निर्मित होता है- वह है उसकी क्रियात्मकता, अविष्कार के स्वरूप तथा व्यापक क्रिया-कलाप।

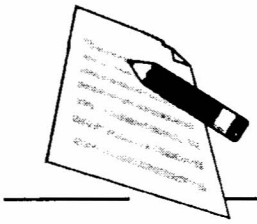

Notes

पाठान्त प्रश्न्

(1) भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अर्थ संक्षेप में लिखिए।

(2) भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए हमारी संस्कृति के दो पहलुओं की विवेचना कीजिए।

(3) संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

(अ) आदर्श प्रतिमान एवं जीवन-मूल्य।

(ब) कला एवं चित्रकला।

(4) भारतीय वैज्ञानिकों का योगदान संक्षेप में लिखिए।

शब्द–कोष

(अ) वास्तु-कला- भवनों के मानचित्र बनाने और भवन-निर्माण की कला और विज्ञान मूर्तिकला या शिल्पकला

(ब) शिल्पकला- वह कला या अभ्यास जो लकड़ी, संगमरमर या मिट्टी के ऊपर खुदाई द्वारा चित्र या मूर्तिया बनाना सिखाए।

(स) विरासत; पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त या अर्जित कोई वस्तु।

(द) आदर्श प्रतिमान; एक विशिष्ट जन-समुदाय के लिए खास तरीकें या स्तर की आदर्श बातें।

(इ) खगोल शास्त्र; पृथ्वी से ऊपर विश्व या जगत का वैज्ञानिक-अध्ययन।

(ई) लिखित (ट्रीटाइज)दस्तावेज; किसी विषय का व्यवस्थित रूप से लिखित औपचारिक विवरण।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

33.1 (1) अदारंग और सदारंग..... बीणा

(2) रघुनाथ पाणिग्रही और संजुक्ता पाणिग्रही..... ओडिसी

(3) रुकमिनी देवी ..... भरतनाट्यम्

(4) मैडम सिमकी ..... कथकली

33.2 (अ) कोणार्क (ब) कलकत्ता (स) जयपुर (द) आगरा

33.3 (अ) बौद्धायन (ब) आर्यभट्ट (स) सी0 वी0 रमन (द) टाटा।